

---

# Shri Ganeshastavanam by Valmiki

---

वाल्मीकिद्वृतं श्रीगणेशस्तवनम् अथवा गणेशाष्टकम्

---

## Document Information

---

Text title : Ganeshastavanam by vAlmIki

File name : gaNeshastavanamvAlmIki.itx

Category : aShTaka, ganesha, stava

Location : doc\_ganesha

Transliterated by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

Proofread by : Jonathan Wiener, NA

Description-comments : gaNesharahasya ashok kumAr gauD

Latest update : July 6, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 11, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Ganeshtavanam by Valmiki

---

### वाल्मीकिकृतं श्रीगणेशस्तवनम् अथवा गणेशाष्टकम्

---



यतुःषष्टिकोट्याभ्यविद्याप्रदं त्वां सुराचार्यविद्याप्रदानापदानम् ।  
कडाभीष्टविद्यार्पकं दन्तयुग्मं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ १ ॥

स्वनाथं प्रधानं मडाविघ्ननाथं निजेच्छाविसृष्टाएऽवृन्देशनाथम् ।  
प्रभु दक्षिणास्यस्य विद्याप्रदं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ २ ॥

विभो व्यासशिष्यादिविद्याविशिष्टप्रियानेकविद्याप्रदातारमाधम् ।  
मडाशाक्तदीक्षागुरुं श्रेष्ठं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ३ ॥

विधाने त्रयीमुप्यवेदांश्च योगं मडाविषणवे यागमाग् शङ्कराय ।  
दिशन्तं च सूर्याय विद्यारुडस्यं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ४ ॥

मडाबुद्धिपुत्राय चैकं पुराणं दिशन्तं गजास्यस्य माडात्मयुक्तम् ।  
निजज्ञानशक्त्या समेतं पुराणं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ५ ॥

त्रयीशीर्षसारं रुचानेकमारं रमाबुद्धिदारं परं ब्रह्मपारम् ।  
सुरस्तोमकायं गणौघाधिनाथं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ६ ॥

सिदानन्दरूपं मुनिध्येयरूपं गुणातीतमीशं सुरेशं गणेशम् ।  
धरानन्दलोकादिविवासाप्रियं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ७ ॥


अनेकप्रतारं सुरक्ताब्जहारं परं निर्गुणं विश्वसद्ब्रह्मरूपम् ।  
मडावाक्यसन्दोडतात्पर्यमूर्तिं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि ॥ ८ ॥


एदं ये तु कव्यष्टकं भक्तियुक्ता-  
त्रिसन्ध्यं पठन्ते गजास्यं स्मरन्तः ।  
कवित्वं सुवाक्यार्थमत्यद्भुतं ते  
लभन्ते प्रसादाद् गणेशस्य मुक्तिम् ॥ ९ ॥

एति ब्रह्मपुराणे वाल्मीकिकृतं गणेशस्तवनं समाप्तम् ।  
कव्यष्टकम्

Encoded and proofread by Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net

---

——  
*Shri Ganeshastavanam by Valmiki*  
pdf was typeset on May 11, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

